आकलन : टीम खेल

प्रेरणा शिवपुरी

आपके जीवन में ऐसा कई बार हुआ होगा कि जब आपसे अपनी क्षमताओं पर चिन्तन करके उनका मूल्यांकन करने के लिए कहा गया होगा और आपने या तो जवाब देने से पहले थोड़ा-सा समय लिया होगा या अपने बारे में कुछ अनिश्चित- सी बातें लिखी होंगी!

आश्चर्य की बात है कि हममें से अधिकांश लोगों में आत्म-चिन्तन या मूल्यांकन-क्षमता स्वाभाविक रूप से नहीं आती। पीछे मुड़कर देखें तो हमें अपने स्कूलों में अपने सभी कौशलों और क्षमताओं का विकास कर लेना चाहिए था, लेकिन जो क्षमता न केवल हमारे पेशेवर जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है वरन हमारे व्यक्तिगत जीवन पर काफी हद तक प्रभाव डालती है-उस पर स्कूल शायद ही ध्यान देते हैं। मूल्यांकन के सारे प्रतिमान इस विश्वास पर आधारित हैं कि बच्चे के जीवन में जानकार वयस्क-यानि शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान देते हैं और मूल्यांकन भी उन्हें ही करना है और साथ ही यह निष्कर्ष भी उन्हें ही निकालना है कि विद्यार्थी ने कितनी अच्छी तरह से सीखा है। अपने विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन करने में शिक्षकों की भूमिका वाकई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। लेकिन यह और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि विद्यार्थी के अधिगम की प्रक्रिया को एक सहयोगात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा जाए न कि ऐसी प्रक्रिया के रूप में जिसमें शिक्षक विद्यार्थी के लिए निष्कर्ष निकालते हों।

सहयोगात्मकता का चयन क्यों ?

सच्चे शिक्षण का एक सिद्धान्त यह है कि "मन के खुद के विकास में मन का परामर्श लेना चाहिए"- श्री अरविन्द का यह विचार इंगित करता है कि अपने अधिगम व उसके विकास की प्रक्रियाओं तथा फैसलों में शिक्षार्थी का भाग लेना कितना आवश्यक है। यह बात सिर्फ अधिगम के लिए ही नहीं बल्कि अधिगम के आकलन के लिए भी सच है। ऑस्ट्रेलिया में हुए शोध (Midgley ond Petty 1983) से पता चला है कि नए स्नातकों ने अपने खुद के प्रदर्शन का आकलन करने की क्षमता को अपने काम में प्रयुक्त कौशलों में से सबसे महत्त्वपूर्ण कौशल माना, लेकिन इस कौशल को उनके स्कूल या डिग्री कोर्सों में पूरी तरह से नजरअन्दाज कर दिया गया था। ऐसे परिदृश्य में यह अनिवार्य-सा लगता है कि शिक्षा के क्षेत्र में आत्म-मूल्यांकन के कौशल को सिखाना ही चाहिए। इसके लिए सबसे प्रभावी और सामान्य तरीका यह है कि विद्यार्थियों के आकलन में शिक्षक उनका सहयोग लें। सहयोगात्मक दृष्टिकोण क्यों प्रभावी साबित होगा, इसके तीन महत्त्वपूर्ण कारण हैं-

- **उत्कृष्टता की खोज** : इस विधि में जब शिक्षक विद्यार्थियों के साथ काम करके इस बात का मूल्यांकन करते हैं कि विद्यार्थियों ने आवश्यक कौशलों व अवधारणाओं को कितनी अच्छी तरह से सीखा है तो इसमें यह मंशा निहित होती है कि उनकी गुणवत्ता और उपलब्धि के मानदण्ड को लगातार बढ़ाया जाए। इसमें प्रतियोगिता के तत्व को प्रगति के साधन के रूप में कतई शामिल नहीं किया गया है बल्कि यह तो विद्यार्थियों को अपने अधिगम की शैली और क्षमताओं को समझने में सक्षम बनाता है ताकि वे उस अधिगम का प्रयोग अपने खुद के लिए तय किए हुए क्षेत्रों में उत्कृष्टता पाने के लिए कर सकें। इस प्रक्रिया से बच्चों के भीतर उत्कृष्टता एक गुण के रूप में इसलिए भी प्रकट होगी क्योंकि इससे उनमें अपने काम को लगातार निष्पक्ष और गम्भीर रूप से देखने की आदत पड़ जाती है। वे अपने शिक्षकों एवं साथियों का फीडबैक लेने में सक्षम हो जाते हैं और

उसके अनुसार काम करने लगते हैं और जब तक वांछित मानदण्डों तक पहुँच नहीं जाते तब तक अपने काम में दृढ़ता से जुटे रहते हैं। वास्तव में ये बेहद मूलभूत क्षमताएँ हैं जो किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता पाने के लिए हर एक के लिए जरूरी हैं।

- **अधिगम के ओनरशिप का निर्माण** : अगर हम बच्चों को एक ऐसे समूह के रूप में देखें जो अपने जीवन में वयस्कों से ज्ञान प्राप्त करते हैं और अपने अधिगम की यात्रा में जिन्हें कुछ कहने का अधिकार नहीं है तो यह बड़ी कमजोर सी प्रक्रिया होगी। एक रचनात्मकतावादी के नजरिए से देखें तो जब विद्यार्थी अपने ज्ञान का निर्माण खुद करते हैं और जब अपने अधिगम के लिए उनमें जिम्मेदारी की भावना होती है तब अधिगम और अधिक सार्थक व समृद्ध होता है। सहयोगात्मक रूप से मूल्यांकन की प्रक्रिया में भाग लेने से हम विद्यार्थियों को इस बात में सक्षम करते हैं कि वे अपने शिक्षकों के साथ अधिगम की पूरी प्रक्रिया की ओनरशिप को साझा करें। इसका प्रभाव सभी स्तरों पर पड़ता है जैसे-पाठ्यक्रम व नियोजन, कक्षा अध्यापन और सहयोगात्मक प्रक्रिया को चलाने में शिक्षकों को कैसे तैयार किया जा रहा है आदि।

- **उच्च स्तरीय सोच कौशल का विकास** : इन दिनों अधिकांश स्कूल आजीवन शिक्षार्थी विकसित करने का वादा करते हैं और इस सिलसिले में हम सबने उच्च स्तरीय सोच कौशल (higher order thinking skills- HOTS) के बारे में सुना होगा। इन कौशलों पर अधिक ध्यान इसलिए दिया जा रहा है क्योंकि इनमें काफी हद तक विद्यार्थियों के अधिगम को समृद्ध करने की सामर्थ्य है और ये उनमें विवेक बुद्धि का विकास करते हैं जिसका उनके जीवन के हर क्षेत्र में महत्त्व है जैसे-अकादमिक, व्यक्तिगत, सामाजिक इत्यादि। जब विद्यार्थी अपने खुद के अधिगम के बारे में अपने शिक्षकों के साथ मिलकर चिन्तन, निर्णय, मूल्यांकन और समीक्षा करते हैं तो वास्तव में इन्हीं मूलभूत कौशलों का विकास कर रहे होते हैं, जिससे उन्हें अपने अधिगम में तो सहायता मिलती ही है, साथ ही वे अपने जीवन के हर पहलू में बेहतर विचारक व निर्णय लेने वाले बनते हैं।

वास्तव में, जब हम इन तीन कारणों द्वारा संकेतित परिप्रेक्ष्य पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि प्रतिमान में एक प्रमुख बदलाव की आवश्यकता है। जब हम विद्यार्थी का मूल्यांकन आगे के अधिगम के लिए इनपुट के रूप में करने के इरादे से करते हैं तो यह अधिगम 'के लिए' आकलन बन जाता है न कि अधिगम 'का' आकलन। लेकिन हमारे अधिकांश स्कूलों में सामान्यतया दूसरे वाले दृष्टिकोण को ही अपनाया जाता है। हालाँकि इस बात की थाह लेना जरूरी है कि विद्यार्थियों ने कितना और कितनी अच्छी तरह सीखा है लेकिन अधिगम चक्र को इस बिन्दु पर आकर समाप्त नहीं हो जाना चाहिए। यह बात अधिक मायने रखती है कि हम विद्यार्थी के मूल्यांकन से मिली जानकारी के साथ क्या करते हैं और यही बात विद्यार्थियों के लिए आगे के अधिगम को डिजाइन करने में एक महत्त्वपूर्ण घटक का काम करती है। अपने लेख 'विद्यार्थी की दृष्टि से आकलन' में लेखक और सलाहकार रिक स्टिगिन्स ने अधिगम के लिए आकलन को बहुत अच्छी तरह से समझाया है :

"अधिगम के लिए आकलन, विद्यार्थी व शिक्षक, दोनों को ही समझ में आने योग्य जानकारी इस तरह से देता है कि जिसका उपयोग वे प्रदर्शन को सुधारने के लिए तुरन्त कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में विद्यार्थी आत्म-आकलनकर्ता एवं आकलन की जानकारी के प्रयोगकर्ता दोनों बन जाते हैं। समय के साथ-साथ जैसे-जैसे वे अपने सुधार का अनुभव करते हैं और उसे समझने लगते हैं वैसे-वैसे शिक्षार्थी यह महसूस करने लगते हैं कि अगर वे प्रयत्न करते रहें तो अवश्य सफलता पा सकते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें जीत के रास्ते पर ले जाती है और उन्हें वहीं टिकाए रख सकती है।

जब हम आकलन का प्रयोग अधिगम के लिए करते हैं तो आकलन किसी इकाई विशेष के शिक्षण के बाद होने वाली एक घटना न रहकर और अधिक व्यापक हो जाता है। यह सम्मिश्रित अनुभवों की शृंखला बन जाता है जो विद्यार्थियों को आत्मविश्वासी बनाने व अपनी प्रगति पर ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा उनके सीखने के प्रयासों

को बढ़ाता है, भले ही बीच-बीच में असफलताएँ क्यों न आ जाएँ।"

इस सारी चर्चा के बाद वही हमेशा वाला बड़ा सवाल सामने आता है कि "इस विजन को कार्य रूप में कैसे परिणत किया जाए?" क्योंकि कोई भी विचार तब सफल होता है जब वह ठोस और लागू करने योग्य अभ्यासों का रूप ले ले। नीचे कुछ ऐसी कार्य नीतियाँ दी गई हैं जिनसे इस विजन को कार्य रूप में परिणत किया जा सकता है।

सहयोग के लिए कार्य नीतियाँ

स्कूल की दैनिक दिनचर्या में विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच सहयोग स्थापित करना एक कठिन काम लग सकता है। पर सच्चाई यह है कि विद्यार्थी के अधिगम का आकलन करने के लिए ऐसी कई सरल और प्रभावी कार्य नीतियाँ हैं जिन्हें अपनाया जा सकता है। इनमें से कुछ यहाँ साझा की जा रही हैं :

- **संरचित आकलन का नियोजन** : आकलन के अभ्यासों की सफलता इस बात पर निर्भर होती है कि शिक्षक उसकी योजना कैसे बनाते हैं। एक तरह से देखा जाए तो इसके लिए शिक्षक के रूप में हमें बिलकुल उल्टी तरफ से शुरू करके योजना बनानी चाहिए यानि कि योजना बनाते समय अन्तिम ध्येय को ध्यान में रखना चाहिए। जब हम अपने विद्यार्थियों के लिए अधिगम के लक्ष्य निर्धारित करते हैं तो साथ में हमें यह भी सोचना चाहिए कि हम यह कैसे जानेंगे कि जो कुछ भी हम पढ़ाना चाहते हैं उसे विद्यार्थियों ने सीख लिया है। इसलिए संरचित उपकरण एवं टेम्प्लेट्स की यहाँ बहुत बड़ी भूमिका है और इनकी तैयारी अधिगम के लक्ष्य निर्धारित करते समय ही कर लेनी चाहिए न कि अन्त में। यह भी जरूरी है कि जिस चीज का मूल्यांकन करना है उसके हिसाब से आकलन के उपकरणों का चयन ध्यान से किया जाए। संरचित उपकरण के अनेक प्रकारों जैसे रूब्रिक्स, नियत कार्य, टेस्ट, कार्य के नमूने आदि में से हमें वह प्रकार चुनना चाहिए जो उस चीज के लिए उपयुक्त हो जिसका हम आकलन करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए भाषा के कौशलों का आकलन रूब्रिक्स के माध्यम से प्रभावी रूप से किया जा सकता है, जबकि सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए हमें अलग प्रकार के उपकरण की जरूरत पड़ेगी जैसे कि शिक्षक के विवरणात्मक अवलोकन। अस्तु, सहयोग की बात करते वक्त हम नियोजन के इस स्तर पर विद्यार्थियों की भूमिका को नहीं भूल सकते। जहाँ भी सम्भव हो, हम अधिगम-लक्ष्यों को विद्यार्थियों के साथ मिलकर तैयार कर सकते हैं। इसके साथ ही, विद्यार्थी एवं शिक्षक सामूहिक रूप से अधिगम का मूल्यांकन करने के लिए आकलन के मानदण्ड और उपकरण बना सकते हैं। विद्यार्थियों को यह पहले से पता होना चाहिए और उन मानदण्डों को तय करने में भाग लेना चाहिए जिनके आधार पर उनका मूल्यांकन किया जाएगा।
- 360 **डिग्री दृष्टिकोण** : विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच का सहयोग साझेदारी से अधिक आगे बढ़ सकता है। इसे उन हितधारकों तक प्रसारित किया जा सकता है जो बच्चे के तत्काल समुदाय का हिस्सा हैं और जो बच्चों का कुछ आयामों पर मूल्यांकन कर सकते हैं। बच्चे के साथियों और माता-पिता को आकलन प्रक्रिया का हिस्सा बनाने से बच्चे की प्रगति की व्यापक समझ बनेगी तथा साथ ही मूल्यांकन की प्रक्रिया निष्पक्ष होगी क्योंकि कई परिप्रेक्ष्यों को शामिल करने से व्यक्तिनिष्ठता कम होगी और आकलन के समापन के समय स्पष्ट पैटर्न का संकेत मिलेगा। साथियों द्वारा किए जाने वाले मूल्यांकन को शिक्षण विधि में ही समेकित करके कक्षा-अभ्यासों के माध्यम से किया जा सकता है और माता-पिता द्वारा किए जाने वाले मूल्यांकन को विशेष रूप से निर्दिष्ट अन्तराल पर किया जा सकता है, जहाँ माता-पिता को अपने बच्चे का आकलन करने के लिए मानदण्ड और फॉर्मेट दिए जाते हैं।
- **विद्यार्थी द्वारा निर्देशित सम्मेलन**-(Student led conferences & SLC) : एस.एल.सी. वे मंच हैं जहाँ विद्यार्थी अपना काम और अपनी अधिगम यात्रा दूसरों यानि शिक्षकों, साथियों, माता-पिता या अन्य

लोगों के साथ साझा करते हैं। सम्मेलन एक प्रकार की व्यक्तिगत प्रस्तुतियाँ हैं जहाँ बच्चे अपना काम साझा करते हैं और बताते हैं कि उन्होंने क्या और कैसे सीखा और दर्शक उनसे उनके काम के बारे में कोई भी सवाल कर सकते हैं। ये सम्मेलन बच्चों को अपने अधिगम के बारे में चिन्तन करने और अपनी ताकतों को समझकर और अधिक काम करने में मदद देते हैं और वे दूसरों से फीडबैक लेकर उसका उपयोग अपने अधिगम का सुधार करने के लिए कर सकते हैं। हालाँकि प्रस्तुति विद्यार्थी का व्यक्तिगत काम है लेकिन इसकी तैयारी विद्यार्थियों और शिक्षकों का सामूहिक प्रयास है।

- **विद्यार्थी पोर्टफोलियो** : पोर्टफोलियो विद्यार्थी के अधिगम की अवस्था को देखने का कारगर तरीका है। यह विद्यार्थी के काम का कालानुक्रमिक क्रम में संग्रह है जो, स्कूल के विकल्प के अनुसार, एक वास्तविक फाइल या फोल्डर या एक सॉफ्ट कॉपी दस्तावेज या प्रस्तुति के रूप में होता है–स्कूल इनमें से किसी भी रूप का चयन कर सकते हैं। विद्यार्थी द्वारा किसी कौशल को सीखने और हर प्रक्षेत्र में उसकी समझ के सबूतों को इस फोल्डर में विभिन्न श्रेणियों में व्यवस्थित किया जाता है। पोर्टफोलियो को बनाने का कोई एक अकेला प्रारूप नहीं है लेकिन इसमें अनिवार्यत: अधिगम के सभी क्षेत्रों व काम के नमूनों को शामिल करना चाहिए और इससे विद्यार्थी की प्रगति का पता चलना चाहिए। पोर्टफोलियो को विद्यार्थियों द्वारा ही प्रबन्धित किया जा सकता है और वे खुद यह चुनाव कर सकते हैं कि वे कौन-से नमूने इसमें रखना चाहते हैं और दर्शकों के साथ क्या साझा करना चाहते हैं। शिक्षक भी विद्यार्थियों के साथ उनके पोर्टफोलियो पर काम करते हैं। इसके लिए वे उद्देश्य और दिशानिर्देशों को साझा करते हैं, बाद में विद्यार्थियों के काम पर फीडबैक देते हैं, काम के नमूने तय करने में उनकी मदद करते हैं और उन्हें व्यवस्थित करने के द्वारा सुझाव देते हैं।

सहयोग का प्रयोग

सौभाग्य से, (*शायद एन.सी.एफ. 2005 के दिशा निर्देशों एवं सी.सी.ई. की माँग के परिणामस्वरूप*), आज देश में अनेक स्कूल ऐसे हैं जिन्होंने आकलन की दिशा में सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाया है और आकलन के अभ्यासों को विकसित करने की दिशा में कार्यरत हैं। ऐसे ही एक स्कूल, **द हेरिटेज स्कूल** (*गुड़गाँव का एक अनुभवात्मक स्कूल*), में काम करने पर मुझे इस बात का अवसर मिला कि मैं उस स्कूल की आकलन प्रक्रिया के एक भाग के रूप में विद्यार्थियों के लिए ऊपर उल्लिखित कुछ कार्य नीतियों को काम में ला सकूँ। उस स्कूल के शिक्षक पाठ्यचर्या के अधिकांश क्षेत्रों में संरचित रचनात्मक एवं सारांशात्मक आकलन की योजना बना पाए और साथ ही उन्होंने अपने मूल्यांकन में विद्यार्थियों, साथियों और माता-पिता को शामिल करने की कार्य नीतियाँ भी तैयार कीं। वास्तव में मैंने यह देखा कि विद्यार्थी एक अधिक चिन्तनशील व्यक्ति के रूप में विकसित हो रहे थे। वे अपनी ताकत और कमजोरियों के बारे में आसानी से बात कर सकते थे, अपने काम की आलोचना कर सकते थे और यह साझा कर सकते थे कि अपने को और बेहतर बनाने के लिए वे क्या कर सकते हैं!

इस तथ्य के बावजूद कि भारतीय शिक्षा प्रणाली की वास्तविकता ऐसे नवाचारों को कम स्थान देती है; देश भर में विभिन्न समूहों द्वारा उठाए गए कुछ छोटे कदम अन्ततः पूरे तन्त्र को प्रभावित करने में सफल होंगे। आशा है, कुल मिलाकर आकलन और अधिगम के लिए सहयोग की शक्ति अधिक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त करेगी और उसका उपयोग भी अधिक होगा।

प्रेरणा शिवपुरी *इस लेख के लिखे जाने के समय अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में शिक्षक शिक्षा टीम के साथ काम कर रही थीं। उन्होंने शिक्षान्तर तथा गुड़गाँव में द हेरिटेज स्कूल जैसे स्कूलों में काम किया है और पिछले 12 वर्षों से वे पूर्व–प्राथमिक तथा प्राथमिक वर्षों की शिक्षा तथा शिक्षण प्रशिक्षण से जुड़ी हैं। अपने पिछले संगठन में उन्होंने प्राथमिक आयु वर्ग के बच्चों के लिए आकलन उपकरण और कार्य नीतियाँ तैयार करने और उन्हें लागू करने की दिशा में बड़े पैमाने पर काम किया है। उनसे* prernashivpuri@gmail.com *पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: नलिनी रावल*